संपादक की कलम से.....

रामअवतार बैरवा

रचना खोजते नौखेज

बचपन को जीवन का सबसे बेहतरीन, बेफिक्र, व्यवस्थित, और स्वस्थ हिस्सा माना जाता है। यही वह अवस्था है, जहां से जीवन की खुशियां और ग़म तय होते हैं। पन्द्रह से अट्ठारह की उम्र में जो किशोर सजग रहता है, वह जीवन के हर लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और इस उम्र जो भटक गया, वो जीवन भर भटकता रहता है।

बच्चों के लिए साहित्य खूब लिखा जा रहा है। किताबें भी खूब आ रही हैं। अधिकांश साहित्य 6 से 14 बरस के बच्चों या नव-किशोरों के लिए लिखा जा रहा है, जबकि अधिक और जरूरी साहित्य 15 से 18 के बीच के किशोरों के लिए लिखा जाना आज की आवश्यकता है। खुद किताब खरीदकर पढ़ने वाले बच्चे (किशोर) भी इसी उम्र के होते हैं। इस उम्र के किशोरों को पाठ्यक्रम से इतर किसी भी तरह की किताब पढ़ने की छूट देना तक अभिभावकों के लिए खतरे से खाली नहीं है। ये उम्र न परिपक्व होती है न लड़कड़ी। आकर्षणता की बुरी नजर इस उम्र पर सबसे पहले पड़ती है। किसी भी अच्छी-बुरी प्रवृत्ति को बहुत आसानी से ग्रहण करने में यह उम्र बहुत ही ललचायिक होती है। बुरी आदतें भी इसी उम्र की परिचायक हैं और सारी अच्छी आदतें भी इसी उम्र से साथ देना शुरू कर देती हैं। एक ही उम्र का दो धाराओं में बंटना संस्कारों और परिवेश पर अवश्य निर्भर है पर अच्छा और प्रभावी लेखन इस निर्भरता का तीसरा स्तंभ बनकर उभार सकता है।

दु:ख इस बात का है कि बाल पत्र-पत्रिकाएं अब बंद हो चुकी हैं। कोरोना और उसके बाद इस किशोर पीढ़ी के हाथों में मोबाइल अनिवार्य रूप से थमा दिया गया है। उसे जबरदस्ती साहित्य के लिए प्रतिबद्ध भी किया जाए तो भी वह बहुत देर तक उस दृश्य या लेख पर ठहरकर उसे पढ़ नहीं सकता। कोई न कोई साइट चलती स्क्रीन पर एक संदेश भेजकर उसे अपनी ओर खींच लेती है। कुछेक साइट्स को यह अच्छी

तरह पता होता है कि मोबाइल प्रयोग करने वाले किशोर की रुचि कैसी है। उसे वह निरंतर उसी तरह की सामग्री उपलब्ध करवाने में जुट जाता है । पूरा वातावरण बहुत बुरे संक्रमण से गुजर रहा है। अच्छी प्रवृतियां बहुत कम रह गई हैं, जो हैं उनपर मीडिया का पूरा कब्जा है। जो वह चाहता है, कर रहा है, करता रहेगा।

लेखक पूरा युग बदलने की ताकत रखता है। इस संक्रमण से उभरने में वह शत-प्रतिशत सकारात्मक सहयोग दे सकता है । बाल रचनाकार अक्सर इंटरनेट से बहुत दूर रहते हैं। जो स्थापित रचनाकार हैं, वे इंटरनेट का पूरा उपयोग नहीं कर पाते। उनकी उदासीनता बिना बिकी किताबें और बढ़ा रही हैं । मगर यह भी देखने योग्य है कि जब 'साहित्य रत्न' पत्रिका आन लाइन होकर इतने कम समय में देश-विदेश के पाठकों को जोड़ चुकी है फिर कैसे नहीं उनकी रचनाएं और किताबें इन किशोरों को नहीं बांध पाएंगी ? एक लेखक की सारी रचनाएं बेहतर नहीं हो सकती पर किसी भी रचनाकार को यह पता नहीं होता कि उसकी कौनसी रचना बेहतर होगी। गुजारिश है कि अपनी तमाम रचनाओं के साथ एक रचना इस पीढ़ी के लिए अवश्य लिखें , वो बहुत तन्मयता से आपको खोज रहे हैं । पता नहीं कौनसी रचना इन नौखेजों की दिशा बदल दे।